

وَالْأَرْضُ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ٢٨

और ज़मीन में है और वोही इज़्ज़त व हिक्मत वाला है

﴿ ١٣ آياتها ﴾ ﴿ ٦٠ سُورَةُ الْمُتَحَنِّنَاتِ مَدِينَةٌ ٩١ ﴾ ﴿ ٢ رُكُوعَاتُهَا ﴾

सूरए मुत्तहिन्ह मदनिय्या है, इस में तेरह आयतें और दो रूकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اللَّهُ के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ تُلْقُونَ

ऐ ईमान वालो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ² तुम उन्हें ख़बरें

إِلَيْهِمْ بِالْبُودَةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِمَا جَاءَكُمْ مِنَ الْحَقِّ يُخْرِجُونَ

पहुंचाते हो दोस्ती से हालां कि वोह मुन्किर हैं उस हक़ के जो तुम्हारे पास आया³ घर से जुदा करते हैं⁴

1 : सूरए मुत्तहिन्ह मदनिय्या है, इस में दो 2 रूकूअ, तेरह 13 आयतें, तीन सो अड़तालीस 348 कलिमे, एक हज़ार पांच सो दस 1510 हर्फ हैं। **2 :** या'नी कुफ़र को। **शाने नुज़ूल :** बनी हाशिम के खानदान की एक बांदी सारह मदीनए तथ्यिबा में सथ्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के हुज़ूर में हाज़िर हुई जब कि हुज़ूर फ़त्हे मक्का का सामान फ़रमा रहे थे, हुज़ूर ने उस से फ़रमाया : क्या तू मुसलमान हो कर आई ? उस ने कहा : नहीं, फ़रमाया : क्या हिज़रत कर के आई ? अर्ज़ किया : नहीं, फ़रमाया : फिर क्यों आई ? उस ने कहा : मोहताज़ी से तंग हो कर। बनी अब्दुल मुत्तलिब ने उस की इमदाद की कपड़े बनाए सामान दिया, हातिब बिन अबी बलत्आ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ उस से मिले, उन्होंने ने उस को दस दीनार दिये एक चादर दी और एक ख़त अहले मक्का के पास उस की मा'रिफ़त भेजा जिस का मजमून येह था कि सथ्यिदे आलम तुम पर हमले का इरादा रखते हैं तुम से अपने बचाव की जो तदबीर हो सके करो, सारह येह ख़त ले कर रवाना हो गई **अल्लाह** तआला ने अपने हबीब को इस की ख़बर दी, हुज़ूर ने अपने चन्द अस्हाब को जिन में हज़रत अलिये मुर्तज़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ भी थे घोड़ों पर रवाना किया और फ़रमाया मक़ाम रौज़ा खाख़ पर तुन्हें एक मुसाफ़िर औरत मिलेगी उस के पास हातिब बिन अबी बलत्आ का ख़त है जो अहले मक्का के नाम लिखा गया है, वोह ख़त उस से ले लो और उस को छोड़ दो, अगर इन्कार करे तो उस की गरदन मार दो, येह हज़रत रवाना हुए और औरत को ठीक उसी मक़ाम पर पाया जहां हुज़ूर सथ्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया था, उस से ख़त मांगा वोह इन्कार कर गई और क़सम खा गई, सहाबा ने वापसी का क़स्द किया हज़रत अलिये मुर्तज़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने ब क़सम फ़रमाया कि सथ्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की ख़बर ख़िलाफ़ हो ही नहीं सकती और तलवार खींच कर औरत से फ़रमाया या ख़त निकाल या गरदन रख, जब उस ने देखा कि हज़रत बिल्कुल आम़ादए क़ल्ल हैं तो अपने जूड़े में से ख़त निकाला, हुज़ूर सथ्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते हातिब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को बुला कर फ़रमाया कि ऐ हातिब ! इस का क्या बाइस ? उन्हों ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मैं जब से इस्लाम लाया कभी मैं ने कुफ़र नहीं किया और जब से हुज़ूर की नियाज़ मन्दी मुयस्सर आई कभी हुज़ूर की ख़ियानत न की और जब से अहले मक्का को छोड़ा कभी उन की महब्वत न आई। लेकिन वाकिआ येह है कि मैं कुरैश में रहता था और उन की क़ौम से न था, मेरे सिवाए और जो मुहाजिरीन हैं उन के मक्कए मुकर्रमा में रिश्तेदार हैं जो उन के घरबार की निगरानी करते हैं, मुझे अपने घर वालों का अन्देशा था, इस लिये मैं ने येह चाहा कि मैं अहले मक्का पर कुछ एहसान रख दूं ताकि वोह मेरे घर वालों को न सताएं और येह मैं यकीन से जानता हूं कि **अल्लाह** तआला अहले मक्का पर अज़ाब नाज़िल फ़रमाने वाला है, मेरा ख़त उन्हें बचा न सकेगा, सथ्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने उन का येह उज़्र क़बूल फ़रमाया और उन की तस्दीक की। हज़रते उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ मुझे इजाज़त दीजिये इस मुनाफ़िक़ की गरदन मार दूं, हुज़ूर ने फ़रमाया : ऐ उमर ! **अल्लाह** तआला ख़बरदार है जब ही उस ने अहले बद्र के हक़ में फ़रमाया कि जो चाहो करो मैं ने तुन्हें बख़्श दिया, येह सुन कर हज़रते उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के आंसू जारी हो गए और येह आयात नाज़िल हुई। **3 :** या'नी इस्लाम और कुरआन **4 :** या'नी मक्कए मुकर्रमा से।

الرَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ أَنْ تُوْمِنُوا بِاللَّهِ رَبِّكُمْ ۖ إِن كُنتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا

रसूल को और तुम्हें इस पर कि तुम अपने रब **अल्लाह** पर ईमान लाए अगर तुम निकले हो मेरी राह में

فِي سَبِيلِي وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِي تُسْرُونَ إِلَيْهِمْ بِالْمُؤَدَّةِ ۗ وَأَنَا أَعْلَمُ

जिहाद करने और मेरी रिज़ा चाहने को तो उन से दोस्ती न करो तुम उन्हें खुप्या पयाम महबूत का भेजते हो और मैं ख़ूब जानता हूँ

بِمَا أَخْفَيْتُمْ وَمَا أَعْلَنْتُمْ ۖ وَمَنْ يَفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ

जो तुम छुपाओ और जो ज़ाहिर करो और तुम में जो ऐसा करे वोह बेशक सीधी राह

السَّبِيلِ ۝ إِن يَتَّقَوْكُمْ يَكُونُوا لَكُمْ أَعْدَاءً وَيَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ

से बहका अगर तुम्हें पाएँ^५ तो तुम्हारे दुश्मन होंगे और तुम्हारी तरफ़ अपने हाथ^६

أَيْدِيَهُمْ وَالسِّنَنَّهُمْ بِالسُّوءِ وَوَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ ۖ لَنْ تَتَّعَمَّكُمْ

और अपनी ज़बानें^७ बुराई के साथ दराज़ करेंगे और उन की तमन्ना है कि किसी तरह तुम काफ़िर हो जाओ^८ हरगिज़ काम न आएं

أَرْحَامِكُمْ وَلَا أَوْلَادِكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ يُفْصِلُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ بِمَا

तुम्हें तुम्हारे रिश्ते और न तुम्हारी औलाद^९ क़ियामत के दिन तुम्हें उन से अलग कर देगा^{१०} और **अल्लाह**

تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ

तुम्हारे काम देख रहा है बेशक तुम्हारे लिये अच्छी पैरवी थी^{११} इब्राहीम और उस के साथ

مَعَهُ إِذْ قَالُوا الْقَوْمِ لَهُمْ إِنَّا بَرَاءٌ وَأَمِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ

वालों में^{१२} जब उन्होंने ने अपनी कौम से कहा^{१३} बेशक हम बेज़ार हैं तुम से और उन से जिन्हें **अल्लाह** के सिवा

اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا

पूजते हो हम तुम्हारे मुन्किर हुए^{१४} और हम में और तुम में दुश्मनी और अ़दावत ज़ाहिर हो गई हमेशा के लिये

حَتَّىٰ تُوْمِنُوا بِاللَّهِ وَحَدَّةَ إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ لَا اسْتَغْفِرَنَّ

जब तक तुम एक **अल्लाह** पर ईमान न लाओ मगर इब्राहीम का अपने बाप से कहना कि मैं ज़रूर तेरी मग़ि़रत

5 : या'नी अगर कुफ़ार तुम पर मौक़अ पा जाएँ 6 : जब व कत्ल के साथ 7 : सब्बो शत्म और 8 : तो ऐसे लोगों को दोस्त बनाना और

उन से भलाई की उम्मीद रखना और उन की अ़दावत से गाफ़िल रहना हरगिज़ न चाहिये । 9 : जिन की वजह से तुम कुफ़ार से दोस्ती व

मुवालात करते हो 10 : कि फ़रमां बरदार जन्नत में होंगे और काफ़िर ना फ़रमान जहन्नम में । 11 : हज़रते हातिब **رضي الله تعالى عنه** और दूसरे

मोमिनीन को ख़िताब है और सब को हज़रते इब्राहीम **عليه السلام** की इक्तदा करने का हुक़म है कि दीन के मुआमले में अहले क़राबत के साथ

उन का तरीक़ा इख़्तियार करें । 12 : साथ वालों से अहले ईमान मुराद हैं । 13 : जो मुश्रिक थी 14 : और हम ने तुम्हारे दीन की मुख़ालफ़त

لَكَ وَمَا أَمَلْتُكَ لَكَ مِنْ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ

चाहूंगा¹⁵ और मैं **अल्लाह** के सामने तेरे किसी नफ़्अ का मालिक नहीं¹⁶ ऐ हमारे रब हम ने तुझी पर भरोसा किया और तेरी ही तरफ़

أَنْبَأُوا إِلَيْكَ الْبَصِيرُ ٣ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَ

रजूअ लाए और तेरी ही तरफ़ फिरना है¹⁷ ऐ हमारे रब हमें काफ़ि़रों की आज्माइश में न डाल¹⁸ और

اغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ٥ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ

हमें बख़्शा दे ऐ हमारे रब बेशक तू ही इज़्ज़त व हिक्मत वाला है बेशक तुम्हारे लिये¹⁹ उन में

أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَمَنْ يَتَوَلَّ

अच्छी पैरवी थी²⁰ उसे जो **अल्लाह** और पिछले दिन का उम्मीद वार हो²¹ और जो मुंह फेरे²²

فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ٦ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ

तो बेशक **अल्लाह** ही बे नियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा करीब है कि **अल्लाह** तुम में और उन में जो उन

الَّذِينَ عَادَيْتُمْ مِنْهُمْ مَوَدَّةً وَاللَّهُ قَدِيرٌ ٧ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ٨

में से²³ तुम्हारे दुश्मन हैं दोस्ती कर दे²⁴ और **अल्लाह** कादिर है²⁵ और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है

لَا يَهْتَكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُمْ

अल्लाह तुम्हें उन से²⁶ मन्अ नहीं करता जो तुम से दीन में न लड़े और तुम्हें तुम्हारे

مِنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ

घरों से न निकाला कि उन के साथ एहसान करो और उन से इन्साफ़ का बरताव बरतो बेशक इन्साफ़ वाले

इस्ख़ियार की। 15 : यह काबिले इत्तिबाअ नहीं है क्यूं कि वोह एक वा'दे की बिना पर था और जब हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** को जाहिर

हो गया कि वोह कुफ़र पर मुस्तक़िल है तो आप ने उस से बेज़ारी की, लिहाज़ा येह किसी के लिये जाइज़ नहीं कि अपने बे ईमान रिश्तेदार के

लिये दुआए मग़िफ़रत करे। 16 : अगर तू उस की ना फ़रमानाी करे और शिर्क पर काइम रहे। (غاران) 17 : येह भी हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام**

की और उन मोमिनीन की दुआ है जो आप के साथ थे और मा क़ब्ल इस्तिस्ना के साथ मुत्तसिल है लिहाज़ा मोमिनीन को इस दुआ में हज़रते

इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** की इत्तिबाअ करनी चाहिये। 18 : उन्हें हम पर ग़लबा न दे कि वोह अपने आप को हक़ पर गुमान करने लगे। 19 : ऐ

उम्मेते हबीबे खुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** 20 : या'नी हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** और उन के साथ वालों में। 21 : **अल्लाह**

तअ़ाला की रहमत व सवाब और राहते आख़िरत का तालिब हो और अज़ाबे इलाही से डरे। 22 : ईमान से और कुफ़फ़ार से दोस्ती करे

23 : या'नी कुफ़फ़ारे मक्का में से 24 : इस तरह कि उन्हें ईमान की तौफ़ीक़ दे, चुनान्चे **अल्लाह** तअ़ाला ने ऐसा किया और वा'दे फ़ह्दे मक्का

उन में से कसीरुत्ता'दाद लोग ईमान ले आए और मोमिनीन के दोस्त और भाई बन गए और बाहमी महब्वतें बर्दी। शाने नुज़ूल : जब ऊपर

की आयात नाज़िल हुई तो मोमिनीन ने अपने अहले क़राबत की अ़दावत में तशहूद किया उन से बेज़ार हो गए और इस मुआमले में बहुत सख़्त

हो गए तो **अल्लाह** तअ़ाला ने येह आयत नाज़िल फ़रमा कर उन्हें उम्मीद दिलाई कि उन कुफ़फ़ार का हाल बदलने वाला है और येह आयत

नाज़िल हुई। 25 : दिल बदलने और हाल तब्दील करने पर 26 : या'नी उन काफ़ि़रों से। शाने नुज़ूल : हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا**

ने फ़रमाया कि येह आयत ख़ुजाआ के हक़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने रसूले करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से इस शर्त पर सुल्ह की थी कि न आप से

الْمُقْسَطِينَ ⑧ إِنَّمَا يَرْهَبُكُمْ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَتَلْتُمْ فِي الدِّينِ وَ

अल्लाह को महबूब हैं अल्लाह तुम्हें उन्ही से मन्त्र करता है जो तुम से दीन में लड़े या

أَخْرَجُكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ وَظَهْرًا وَعَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَنْ تَوَلَّوهُمْ وَمَنْ

तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला या तुम्हारे निकालने पर मदद की कि उन से दोस्ती करो²⁷ और जो

يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ⑨ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمْ

उन से दोस्ती करे तो वोही सितमगार हैं ऐ ईमान वालो जब तुम्हारे पास

الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ فَاْتَجِرُوهُنَّ ⑩ اللَّهُ أَعْلَمُ بِأَيِّانِهِنَّ فَإِنْ

मुसलमान औरतें कुफ़्रिस्तान से अपने घर छोड़ कर आए तो उन का इम्तिहान कर लो²⁸ अल्लाह उन के ईमान का हाल बेहतर जानता है फिर अगर

عَلَيْتُهُنَّ مَوْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ ⑪ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَ

वोह तुम्हें ईमान वालीयां मा'लूम हों तो उन्हें काफ़िरों को वापस न दो न येह²⁹ उन्हें हलाल³⁰

لَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ ⑫ وَأَتَوْهُنَّ مَا أَنْفَقُوا ⑬ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ

न वोह इन्हें हलाल³¹ और उन के काफ़िर शोहरों को दे दो जो उन का खर्च हुवा³² और तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि

क़िताल करेंगे न आप के मुखालिफ़ को मदद देंगे । अल्लाह तआला ने उन लोगों के साथ सुलूक करने की इजाज़त दी । हज़रते

अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने फ़रमाया कि येह आयत उन की वालिदा अस्मा बिनते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا के हक़ में नाज़िल हुई, उन

(हज़रते अस्मा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) की वालिदा मदीनए तथ्यिबा में उन के लिये तोहफ़े ले कर आई थीं और थीं मुशरिका तो हज़रते अस्मा ने उन

के हदाया कबूल न किये और उन्हें अपने घर में आने की इजाज़त न दी और रसूले करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ से दरयापत किया कि क्या हुकम

है ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और रसूले करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने इजाज़त दी कि उन्हें घर में बुलाएं, उन के हदाया कबूल

करें, उन के साथ अच्छा सुलूक करें । 27 : या'नी ऐसे काफ़िरों से दोस्ती मन्मूअ है । 28 : कि उन की हिज़रत खालिस दीन के लिये है,

ऐसा तो नहीं है कि उन्होंने ने शोहरों की अ़दावत में घर छोड़ा हो, हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि उन औरतों को कसम

दी जाए कि वोह न शोहरों की अ़दावत में निकली हैं और न किसी दुन्यवी वजह से, उन्होंने ने सिर्फ़ अपने दीन व ईमान के लिये हिज़रत

की है । 29 : मुसलमान औरतें 30 : या'नी काफ़िरों को 31 : या'नी न काफ़िर मर्द मुसलमान औरतों को हलाल । मरअला : औरत मुसलमान

हो कर काफ़िर मर्द की जौजिय्यत से खाली हो गई । 32 : या'नी जो महर उन्होंने ने उन औरतों को दिये थे वोह उन्हें वापस कर दो, येह हुकम

अहले जिम्मा के लिये है जिन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई, लेकिन हर्बी औरतों के महर वापस करना न वाजिब न सुन्नत

(وَإِنْ كَانَ الْأَمْرُ بِأَيِّسَاءِ مَا أَنْفَقُوا لِلرُّجُوبِ فَهُوَ مَنسُوحٌ وَإِنْ كَانَ لِنَدْبٍ كَمَا هُوَ قَوْلُ الشَّافِعِيِّ فَلَا)

मरअला : और येह महर देना उस सूरत में है जब कि औरत का

काफ़िर शोहर उस को त़लब करे और अगर न त़लब करे तो उस को कुछ न दिया जाएगा । मरअला : इसी तरह अगर काफ़िर ने उस मुहाजिरा

को महर नहीं दिया था तो भी वोह कुछ न पाएगा । शाने नुज़ूल : येह आयत सुल्हे हुदैबिया के बा'द नाज़िल हुई, सुल्ह में येह शर्त थी कि

मक्का वालों में से जो शख्स ईमान ला कर सथियदे आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में हाज़िर हो उस को अहले मक्का वापस ले

सकते हैं, इस आयत में येह बयान फ़रमा दिया गया कि येह शर्त सिर्फ़ मर्दों के लिये है औरतों की तसरीह अ़हद नामे में नहीं न औरतें

इस क़रार दाद में दाख़िल हो सकती हैं क्यूं कि मुसलमान औरत काफ़िर के लिये हलाल नहीं । बा'ज मुफ़स्सरीने ने फ़रमाया कि येह आयत

हुकमे अव्वल की नासिख़ है येह इस तक्दीर पर है कि औरतें अ़हदे सुल्ह में दाख़िल हों, मगर औरतों का इस अ़हद में दाख़िल होना

सहीह नहीं क्यूं कि हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से अ़हद नामे के येह अल्फ़ाज़ मरवी हैं (لَا يَأْتِيكَ بِمَارْجَلٍ وَإِنْ كَانَ عَلَىٰ دِينِكَ الْإِرْدُدُّهُ)

या'नी हम में से जो मर्द आप के पास पहुंचे ख़्वाह वोह आप के दीन ही पर हो आप उस को वापस देंगे ।

تَكَحُّوهُنَّ إِذَا تَيَّمُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ ۖ وَلَا تَسْكُوبُوا بِعَصَمِ الْكُوفِرِ

उन से निकाह कर लो³³ जब उन के महर उन्हें दो³⁴ और काफिरनियों के निकाह पर जमे न रहो³⁵

وَسَأَلُوا مَا أَنْفَقْتُمْ وَلَيْسَ أَوْ مَا أَنْفَقُوا ۖ ذَلِكُمْ حُكْمُ اللَّهِ يَحْكُمُ

और मांग लो जो तुम्हारा खर्च हुआ³⁶ और काफिर मांग लें जो उन्होंने ने खर्च किया³⁷ यह **اللَّهُ** का हुक्म है वोह तुम में

بَيْنَكُمْ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ 10 وَإِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِنْ أَرْوَاجِكُمْ إِلَى

फैसला फरमाता है और **اللَّهُ** इल्मो हिकमत वाला है और अगर मुसलमानों के हाथ से उन की कुछ औरतों काफिरों की तरफ

الْكُفَّارِ فَعَاقِبْتُمْ فَاتُوا الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَرْوَاجُهُمْ مِثْلَ مَا أَنْفَقُوا ۖ

निकल जाए³⁸ फिर तुम काफिरों को सजा दो³⁹ तो जिन की औरतें जाती रही थीं⁴⁰ गनीमत में से उन्हें उतना दे दो जो उन का खर्च हुआ था⁴¹

وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝ 11 يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ

और **اللَّهُ** से डरो जिस पर तुम्हें ईमान है ऐ नबी जब तुम्हारे हुजूर मुसलमान

الْمُؤْمِنَاتُ يَبَيعنَكَ عَلَىٰ أَنْ لَا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا

औरतें हाजिर हों इस पर बैअत करने को कि **اللَّهُ** का शरीक कुछ न ठहराएंगी और न चोरी करेंगी और न

يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِهْتَانٍ يَفْتَرِيهِنَّ بَيْنَ

बदकारी और न अपनी औलाद को क़त्ल करेंगी⁴² और न वोह बोहतान लाएंगी जिसे अपने हाथों

33 : या'नी मुहाजिरा औरतों से, अगर्चे दारुल हर्ब में उन के शोहर हों क्यूं कि इस्लाम लाने से वोह उन शोहरों पर हराम हो गई और उन की जौजियत में न रहें। **मस्अला** : **وَاحْتَجَّ بِهِ أَبُو حَنِيفَةَ عَلَىٰ أَنْ لَعْنَةَ عَلَىٰ الْمُتَهَجِّرَةِ فَيَسُوْرُ لَهَا التَّرْوِجُ مِنْ غَيْرِ عِدَّةٍ خِلَافًا لَهَا** 34 : महर देने से मुराद इस को अपने जिम्मे लाजिम कर लेना है अगर्चे बिलफैल न दिया जाए। **मस्अला** : इस से येह भी साबित हुवा कि उन औरतों से निकाह करने पर नया महर वाजिब होगा उन के शोहरों को जो अदा कर दिया गया वोह उस में मुजरा व महसूब (शुमार) न होगा। 35 : या'नी जो औरतें दारुल हर्ब में रह गई या मुरतदा हो कर दारुल हर्ब में चली गई उन से जौजियत का अलाका (तअल्लुक) न रखो, चुनान्चे येह आयत नाजिल होने के बा'द अस्थाबे रसूल **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने उन काफिरा औरतों को तलाक दे दी जो मक्काए मुकर्रमा में थीं। **मस्अला** : अगर मुसलमान की औरत (مَعَادَ اللَّهِ) मुरतदा हो जाए तो इस के कैदे निकाह से बाहर न होगी (عَلَيْهِ الْفَتْوَى زَجْرًا وَتَيْسُرًا) 36 : या'नी उन औरतों को तुम ने जो महर दिये थे वोह उन काफिरों से वुसूल कर लो जिन्हों ने उन से निकाह किया। 37 : अपनी औरतों पर जो हिजरत कर के दारुल इस्लाम में चली आई उन के मुसलमान शोहरों से जिन्हों ने उन से निकाह किया। 38 **शाने नुजूल** : इस आयत के नाजिल होने के बा'द मुसलमानों ने तो मुहाजिरा औरतों के महर उन के काफिर शोहरों को अदा कर दिये और काफिरों ने मुरतदा के महर मुसलमानों को अदा करने से इन्कार किया, इस पर येह आयत नाजिल हुई। 39 : जिहाद में और उन से गनीमत पाओ। 40 : या'नी मुरतदा हो कर दारुल हर्ब में चली गई थीं। 41 : उन औरतों के महर देने में। हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَىٰ عَنْهُمَا** ने फरमाया कि मोमिनीने मुहाजिरीन की औरतों में से छ⁶ औरतें ऐसी थीं जिन्हों ने दारुल हर्ब को इख्तियार किया और मुशिरकीन के साथ लाहिक् हुई और मुरतदा हो गई, रसूले करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने उन के शोहरों को माले गनीमत से उन के महर अत्ता फरमाए। **फ़ाएदा** : इन आयतों में मुहाजिरा के इम्तिहान और कुफ़्फ़ार ने जो अपनी बीबियों पर खर्च किया हो वोह बा'दे हिजरत उन्हें देना और मुसलमानों ने जो अपनी बीबियों पर खर्च किया हो वोह उन के मुरतदा हो कर काफिरों से मिल जाने के बा'द उन से मांगना और जिन की बीबियां मुरतदा हो कर चली गई हों उन्हों ने जो उन पर खर्च किया था वोह उन्हें माले गनीमत में से देना येह तमाम

أَيُّدِيَهُنَّ وَأَرْجُلَهُنَّ وَلَا يَعْصِيَنَّكَ فِي مَعْرُوفٍ فَبَايِعُهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ

और पाउं के दरमियान या'नी मौजूए विलादत में उठाए⁴³ और किसी नेक बात में तुम्हारी ना फ़रमानी न करेगी⁴⁴ तो उन से बैअत लो और **اللَّهُ** से

لَهُنَّ اللَّهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٢﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا

उन की मग़िफ़रत चाहे⁴⁵ बेशक **اللَّهُ** बख़्शने वाला मेहरबान है ऐ ईमान वालो उन लोगो

تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَسُؤْا مِنَ الْآخِرَةِ كَمَا

से दोस्ती न करो जिन पर **اللَّهُ** का ग़ज़ब है⁴⁶ वोह आख़िरत से आस तोड़ बैठे है⁴⁷ जैसे

يَسِ الْكُفَّارُ مِنَ أَصْحَابِ الْقُبُورِ ﴿١٣﴾

काफ़िर आस तोड़ बैठे क़ब्र वालों से⁴⁸

अहकाम मन्सूख़ हो गए आयते सैफ़ या आयते ग़नीमत या सुन्नत से क्यूं कि येह अहकाम ज़भी तक बाकी रहे जब तक येह अहद रहा और जब वोह अहद उठ गया तो अहकाम भी न रहे । 42 : जैसा कि ज़मानए जाहिलिय्यत में दस्तूर था कि लड़कियों को ब खयाले आर व ब अन्देशए नादारी जिन्दा दफ़न कर देते थे, इस से और हर क़त्ले नाहक़ से बाज़ रहना इस अहद में शामिल है । 43 : या'नी पराया बच्चा ले कर शोहर को धोका दें और उस को अपने पेट से जना हुवा बताएं जैसा कि जाहिलिय्यत के ज़माने में दस्तूर था । 44 : नेक बात **اللَّهُ** और उस के रसूल की फ़रमां बरदारी है । 45 : मरवी है कि जब सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** रोज़े फन्हे मक्का मर्दों की बैअत ले कर फारिग़ हुए तो कोहे सफ़ा पर औरतों से बैअत लेना शुरू की और हज़रते उमर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** नीचे खड़े हुए हुजूर का कलामे मुबारक औरतों को सुनाते जाते थे, हिन्द बिन्ने उल्का अबू सुफ़यान की बीवी ख़ौफ़ज़दा बुर्क़अ पहन कर इस तरह हाज़िर हुई कि पहचानी न जाए, सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया कि मैं तुम से इस बात पर बैअत लेता हूं कि तुम **اللَّهُ** तआला के साथ किसी चीज़ को शरीक न करो, हिन्द ने सर उठा कर कहा कि आप हम से वोह अहद लेते हैं जो हम ने आप को मर्दों से लेते नहीं देखा और उस रोज़ मर्दों से सिर्फ़ इस्लाम व जिहाद पर बैअत ली गई थी, फिर हुजूर ने फ़रमाया : और चोरी न करेंगी, तो हिन्द ने अज़ किया कि अबू सुफ़यान बख़ील आदमी हैं और मैं ने उन का माल ज़रूर लिया है मैं नहीं समझी मुझे हलाल हुवा या नहीं, अबू सुफ़यान हाज़िर थे उन्हों ने कहा जो तू ने पहले लिया और जो आयिन्दा ले सब हलाल, इस पर नबिय्ये करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने तबस्सुम फ़रमाया और इशाद किया : तू हिन्द बिन्ने उल्का है, अज़ किया : जी हां जो कुछ मुझ से कुसूर हुए हैं मुआफ़ फ़रमाइये फिर हुजूर ने फ़रमाया : और न बदकारी करेंगी, तो हिन्द ने कहा क्या कोई आज़ाद औरत बदकारी करती है, फिर फ़रमाया : न अपनी औलाद को क़त्ल करें । हिन्द ने कहा : हम ने छोटे छोटे पाले जब बड़े हो गए तुम ने उन्हें क़त्ल कर दिया, तुम जानो और वोह जानें, उस का लड़का हन्ज़ला बिन अबी सुफ़यान बद्र में क़त्ल कर दिया गया था, हिन्द की येह गुफ़्तगू सुन कर हज़रते उमर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** को बहुत हंसी आई फिर हुजूर ने फ़रमाया कि अपने हाथ पाउं के दरमियान कोई बोहतान न घटेंगी, हिन्द ने कहा बखुदा बोहतान बहुत बुरी चीज़ है और हुजूर हम को नेक बातों और बरतर ख़स्लतों का हुक्म देते हैं, फिर हुजूर ने फ़रमाया कि किसी नेक बात में रसूल को ना फ़रमानी न करेगी, इस पर हिन्द ने कहा कि इस मजलिस में हम इस लिये हाज़िर ही नहीं हुए कि अपने दिल में आप की ना फ़रमानी का खयाल आने दें औरतों ने इन तमाम उमूर का इक्वार किया और चार सो सत्तावन औरतों ने बैअत की, इस बैअत में सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने मुसाफ़हा न फ़रमाया और औरतों को दस्ते मुबारक छूने न दिया, बैअत की कैफ़ियत में येह भी बयान किया गया है कि एक क़दह पानी में सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने अपना दस्ते मुबारक डाला फिर उसी में औरतों ने अपने हाथ डाले और येह भी कहा गया है कि बैअत कपड़े के वासिते से ली गई और बईद नहीं है कि दोनों सूरतें अमल में आई हों । **मसाइल** : बैअत के वक्त्र मिक्वाज़ का इस्ति'माल मशाइख़ का तरीका है, येह भी कहा गया है कि येह हज़रत अलिय्ये मुर्तज़ा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की सुन्नत है । ख़िलाफ़त के साथ टोपी देना मशाइख़ का मा'मूल है और कहा गया है कि नबिय्ये करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعालَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से मन्कूल है । औरतों की बैअत में अजनबिय्या का हाथ छूना ह़राम है । या बैअत ज़बान से हो या कपड़े वगैरा के वासिते से । 46 : उन लोगो से मुराद यहूद हैं । 47 : क्यूं कि उन्हें कुतुबे साबिका से मा'लूम हो चुका था और वोह ब यकीन जानते थे कि सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** **اللَّهُ** तआला के रसूल हैं और यहूद ने इस की तकज़ीब की है, इस लिये उन्हें अपनी मग़िफ़रत की उम्मीद नहीं । 48 : फिर दुन्या में वापस आने की, या येह मा'ना है कि यहूद सवाबे आख़िरत से ऐसे ना उम्मीद हुए जैसा कि मरे हुए काफ़िर अपनी क़ब्रों में अपने हाल को जान कर सवाबे आख़िरत से बिल्कुल मायूस हैं ।